

HINDI FILE



DREAM
FOR NATION



DARE
TO SERVE



DELIVER
WITH INTEGRITY

DAILY PRACTICE QUESTIONS

BEST FOR UPSC | UP PCS EXAM

DATE : **SEPTEMBER 14, 2026**



Comprehensive
Coverage



Exam-Focused
Analysis



Concept Clarity
& Insights



Practice MCQs
with Explanation



Daily Updates,
Better Results



CONTACT INFO:

+91 92896 33341 | +91 96679 33341



EMAIL ID:

info@sixsigmaias.com



WEB PAGE:

www.sixsigmaias.com



ADDRESS:

C-6, GROUND FLOOR, SECTOR 2,
NEAR SECTOR 15 METRO STATION, NOIDA – 201301, UTTAR PRADESH

दैनिक अभ्यास प्रश्न - स्थैतिक भाग से

प्रश्न 1. औद्योगिक क्रांति और औपनिवेशिक समाजों पर इसके प्रभाव के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. ब्रिटेन में मशीनीकृत कपड़ा उत्पादन के विस्तार ने उन्नीसवीं शताब्दी के दौरान भारत के कपड़ा निर्यात के पैटर्न में एक संरचनात्मक परिवर्तन में योगदान दिया।
2. ब्रिटेन को भारतीय हथकरघा निर्यात में गिरावट विशेष रूप से ब्रिटिश मशीनों की तकनीकी श्रेष्ठता के कारण हुई थी, जिसमें ब्रिटिश वाणिज्यिक या टैरिफ (शुल्क) नीतियों की कोई भूमिका नहीं थी।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा सही है?

- (a) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं, और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या है।
- (b) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं, लेकिन कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या नहीं है।
- (c) कथन 1 सही है, लेकिन कथन 2 गलत है।
- (d) कथन 1 गलत है, लेकिन कथन 2 सही है।

उत्तर: (c)

व्याख्या:

कथन 1 सही है। औद्योगिक क्रांति ने मशीनीकरण के माध्यम से, विशेष रूप से कताई और बुनाई में, ब्रिटेन के कपड़ा उद्योग को पूरी तरह बदल दिया। इसके परिणामस्वरूप हुए बड़े पैमाने पर उत्पादन ने बाजारों के लिए ब्रिटेन की मांग को बढ़ा दिया और कपड़ा व्यापार के पारंपरिक पैटर्न को बदल दिया। भारत, जो ऐतिहासिक रूप से उच्च गुणवत्ता वाले सूती कपड़ों का निर्यात करता था, तेजी से मशीन से बने ब्रिटिश कपड़ों का बाजार और कच्चे कपास का आपूर्तिकर्ता बन गया।

कथन 2 गलत है क्योंकि भारतीय कपड़ा निर्यात में गिरावट का श्रेय केवल तकनीकी श्रेष्ठता को नहीं दिया जा सकता है। ब्रिटिश वाणिज्यिक हितों, भेदभावपूर्ण टैरिफ व्यवस्था, भारतीय निर्मित वस्तुओं पर प्रतिबंध और भारत की अर्थव्यवस्था के व्यापक औपनिवेशिक पुनर्गठन ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस प्रकार, प्रश्न में एक आर्थिक शक्ति के रूप में तकनीकी परिवर्तन और एक संस्थागत शक्ति के रूप में औपनिवेशिक नीति के बीच अंतर करने की आवश्यकता है।

इसका गहरा अर्थ यह है कि औपनिवेशिक भारत में वि-औद्योगीकरण (deindustrialisation) केवल एक सहज बाजार परिणाम नहीं था; यह एक असमान साम्राज्यवादी आर्थिक संरचना के भीतर हुआ।

प्रश्न 2. निम्नलिखित में से कौन सा यह सबसे सटीक रूप से समझाता है कि एकीकृत कीट-प्रबंधन (Integrated Pest Management) प्रणाली में अंधाधुंध रासायनिक नियंत्रण की तुलना में जैविक नियंत्रण (Biological Control) को आम तौर पर बेहतर क्यों माना जाता है?

- (a) जैविक-नियंत्रण कारक हमेशा लक्षित कीट को पूरी तरह से समाप्त कर देते हैं और इसलिए बाद में किसी भी कीट के पुनरुत्थान को रोकते हैं।
- (b) जैविक नियंत्रण कीट आबादी को दबाने के लिए पारिस्थितिक अंतःक्रियाओं (ecological interactions) का उपयोग कर सकता है, जबकि गैर-लक्षित जीवों और पर्यावरणीय प्रणालियों पर संपार्श्विक (collateral) प्रभावों को संभावित रूप से कम कर सकता है।
- (c) जैविक-नियंत्रण कारक हमेशा अपने लक्षित कीटों की तुलना में तेजी से प्रजनन करते हैं और इसलिए कृषि पारिस्थितिकी प्रणालियों में स्थायी रूप से हावी रहते हैं।
- (d) जैविक नियंत्रण फसल चक्र, प्रतिरोधी किस्मों, निगरानी और एकीकृत कीट प्रबंधन के अन्य घटकों की आवश्यकता को समाप्त करता है।

उत्तर: (b)

व्याख्या:

जैविक नियंत्रण में कीट आबादी को नियंत्रित करने के लिए शिकारियों, परजीवियों (parasitoids) और रोगजनकों जैसे प्राकृतिक शत्रुओं का जानबूझकर उपयोग या संरक्षण शामिल है।

विकल्प (b) सही है क्योंकि जैविक नियंत्रण प्राथमिक रूप से व्यापक-स्पेक्ट्रम रासायनिक विषाक्तता पर निर्भर रहने के बजाय मौजूदा पारिस्थितिक संबंधों का उपयोग करने का प्रयास करता है। जब इसे उचित रूप से डिज़ाइन किया जाता है, तो यह कीटनाशक अवशेषों, द्वितीयक कीटों के प्रकोप और लाभकारी जीवों पर हानिकारक प्रभावों को कम कर सकता है।

प्रश्न के भ्रामक विकल्प "हमेशा" (invariably / always), "स्थायी रूप से" (permanently), और "आवश्यकता को समाप्त करता है" (eliminates the need) जैसे शब्दों में छिपे हैं। जैविक नियंत्रण आवश्यक रूप से कीटों का उन्मूलन नहीं करता है। वास्तव में, पूर्ण उन्मूलन न तो आवश्यक है और न ही आमतौर पर वांछनीय है। इसका उद्देश्य आम तौर पर कीट आबादी को आर्थिक रूप से नुकसान पहुँचाने वाले स्तरों से नीचे रखना है।

इसलिए, **विकल्प (a) गलत है** क्योंकि कीटों का दमन पूर्ण उन्मूलन का पर्याय नहीं है। **विकल्प (c) गलत है** क्योंकि शिकारियों, परजीवियों और कीटों की जनसंख्या गतिशीलता पर्यावरणीय परिस्थितियों और शिकार की उपलब्धता पर निर्भर करती है। **विकल्प (d) एकीकृत कीट प्रबंधन (IPM) की अवधारणा के विपरीत है**, जहाँ जैविक नियंत्रण निगरानी, प्रतिरोधी किस्मों, सांस्कृतिक प्रथाओं और सावधानीपूर्वक लक्षित रासायनिक हस्तक्षेप के साथ मिलकर कार्य करता है।

इस प्रकार, वैचारिक अंतर उन्मूलन-उन्मुख नियंत्रण और पारिस्थितिक रूप से सूचित जनसंख्या विनियमन के बीच है।

प्रश्न 3. 1991 से भारत के आर्थिक सुधारों के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

- उदारीकरण (Liberalisation) का उद्देश्य आर्थिक निर्णयों पर प्रत्यक्ष सरकारी नियंत्रण की सीमा को कम करना था, बिना आर्थिक गतिविधियों से राज्य की पूर्ण वापसी का संकेत दिए।
- निजीकरण (Privatisation) का अनिवार्य रूप से तात्पर्य प्रत्येक सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यम का स्वामित्व निजी निवेशकों को हस्तांतरित करना है।

3. वैश्वीकरण (Globalisation) ने अंतर्राष्ट्रीय बाजारों के साथ भारतीय अर्थव्यवस्था के एकीकरण को बढ़ाया, लेकिन इसके प्रभाव क्षेत्रों, फर्मों और श्रमिकों की श्रेणियों में एक समान नहीं रहे हैं।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) सभी तीन
- (d) कोई नहीं

उत्तर: (b)

व्याख्या:

कथन 1 और 3 सही हैं, जबकि कथन 2 गलत है।

कथन 1 सही है। उदारीकरण का व्यापक रूप से तात्पर्य आर्थिक गतिविधि पर अनावश्यक नियामक प्रतिबंधों और नियंत्रणों को कम करना है। इसका मतलब यह नहीं है कि राज्य अर्थव्यवस्था से गायब हो जाता है। राज्य के नियामक, कल्याणकारी, पुनर्वितरण और समष्टि आर्थिक (macrotechnological) कार्य महत्वपूर्ण बने रहते हैं।

कथन 2 गलत है। निजीकरण केवल प्रत्येक सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यम के स्वामित्व को स्थानांतरित करने से कहीं अधिक व्यापक अवधारणा है। इसमें आंशिक विनिवेश (disinvestment), अधिक निजी भागीदारी, प्रबंधन नियंत्रण का हस्तांतरण, पुनर्गठन या सरकार की प्रत्यक्ष भूमिका को कम करने के अन्य रूप शामिल हो सकते हैं। इसके अलावा, विशेष क्षेत्रों में रणनीतिक सार्वजनिक स्वामित्व जारी रह सकता है।

कथन 3 सही है। वैश्वीकरण ने अंतर्राष्ट्रीय व्यापार, निवेश, प्रौद्योगिकी और उत्पादन नेटवर्क के साथ भारत के एकीकरण को बढ़ाया है। हालाँकि, इसके लाभ और समायोजन की लागत असमान रही है। निर्यात-उन्मुख और तकनीकी रूप से उन्नत क्षेत्रों को काफी लाभ हो सकता है, जबकि तीव्र प्रतिस्पर्धा के संपर्क में आने वाले कुछ छोटे उत्पादकों या श्रमिकों को समायोजन के दबाव का सामना करना पड़ सकता है।

मुख्य वैचारिक जाल उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण को एक-दूसरे के स्थान पर इस्तेमाल किए जाने वाले शब्दों के रूप में देखना है। वे आर्थिक सुधार के संबंधित घटक हैं लेकिन अलग-अलग प्रक्रियाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं।

इसलिए, दो कथन सही हैं।

प्रश्न 4. एक जीवंत दस्तावेज (living document) के रूप में भारतीय संविधान के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. संवैधानिक संशोधन की प्रक्रिया संविधान को बदलती सामाजिक, राजनीतिक और संस्थागत परिस्थितियों का उत्तर देने में सक्षम बनाती है।
2. न्यायिक व्याख्या संविधान के विकास में योगदान दे सकती है, भले ही संविधान का मूल पाठ अपरिवर्तित रहे।
3. प्रत्येक संवैधानिक संशोधन के लिए कम से कम आधे राज्य विधानमंडलों द्वारा अनुसमर्थन की आवश्यकता होती है।

4. संवैधानिक संशोधन प्रक्रिया का अस्तित्व यह दर्शाता है कि संसद के पास संविधान के प्रत्येक प्रावधान को बदलने का असीमित अधिकार है।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) केवल तीन
- (d) सभी चार

उत्तर: (b)

व्याख्या:

कथन 1 और 2 सही हैं; कथन 3 और 4 गलत हैं।

कथन 1 सही है। संविधान संशोधित किए जा रहे प्रावधान की प्रकृति और महत्व के आधार पर विभिन्न संशोधन प्रक्रियाएं प्रदान करता है। यह बदलती परिस्थितियों के अनुकूल होने की अनुमति देते हुए संवैधानिक निरंतरता प्रदान करता है।

कथन 2 सही है। संवैधानिक विकास केवल औपचारिक संशोधनों के माध्यम से नहीं होता है। न्यायिक व्याख्या संवैधानिक प्रावधानों के अर्थ और अनुप्रयोग को महत्वपूर्ण रूप से विकसित कर सकती है। मौलिक अधिकारों, संघवाद, शक्तियों के पृथक्करण और अन्य संवैधानिक सिद्धांतों की व्याख्या इस गतिशील चरित्र को दर्शाती है।

कथन 3 गलत है। कम से कम आधे राज्य विधानमंडलों द्वारा अनुसमर्थन केवल कुछ संवैधानिक संशोधनों के लिए आवश्यक है जो निर्दिष्ट संघीय या संस्थागत प्रावधानों से संबंधित हैं। यह प्रत्येक संशोधन के लिए आवश्यक नहीं है।

कथन 4 गलत है। संसद की संशोधन शक्ति असीमित नहीं है। सर्वोच्च न्यायालय का मूल संरचना (Basic Structure) सिद्धांत संशोधन शक्ति पर मौलिक सीमाएँ लगाता है। संसद संविधान में संशोधन कर सकती है, लेकिन वह इसकी मूल संरचना को नष्ट नहीं कर सकती।

मुख्य वैचारिक अंतर संवैधानिक लचीलेपन और संवैधानिक सर्वोच्चता के बीच है। एक संविधान कानूनी रूप से असीमित बने बिना भी विकसित हो सकता है, और भारतीय मॉडल जानबूझकर निरंतरता के साथ अनुकूलन क्षमता को संतुलित करने का प्रयास करता है।

प्रश्न 5. निम्नलिखित कथन (Assertion) और नीचे दिए गए दो कारणों (Reasons) पर विचार कीजिए:

कथन (Assertion):

अन्यथा जल-की कमी वाले कृषि वातावरण वाले क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर सिंचाई का विकास आवश्यक रूप से दीर्घकालिक कृषि स्थिरता सुनिश्चित नहीं करता है।

कारण I (Reason I):

जल उपयोग का खराब प्रबंधन होने पर सिंचाई कृषि उत्पादकता बढ़ा सकती है और साथ ही भूजल में कमी, मिट्टी के लवणीकरण (salinisation) और जलभराव (waterlogging) जैसी समस्याओं में योगदान दे सकती है।

कारण II (Reason II):

सिंचाई की स्थिरता केवल आपूर्ति किए गए पानी की मात्रा पर निर्भर नहीं करती है, बल्कि पानी की उपलब्धता, फसल पैटर्न, मिट्टी की स्थिति, जल निकासी और स्थानीय पारिस्थितिक सीमाओं के बीच के संबंध पर भी निर्भर करती है।

निम्नलिखित में से कौन सा सही है?

- (a) कारण I और कारण II दोनों सही हैं, और दोनों कथन (Assertion) की व्याख्या करते हैं।
- (b) कारण I और कारण II दोनों सही हैं, लेकिन केवल कारण I कथन (Assertion) की व्याख्या करता है।
- (c) कारण I और कारण II दोनों सही हैं, लेकिन केवल कारण II कथन (Assertion) की व्याख्या करता है।
- (d) कारण I और कारण II दोनों गलत हैं।

उत्तर: (a)

व्याख्या:

कथन (Assertion) सही है। सिंचाई कृषि विकास का एक महत्वपूर्ण साधन है, विशेष रूप से उन क्षेत्रों में जहां वर्षा अपर्याप्त या अत्यधिक परिवर्तनशील है। हालांकि, सिंचाई अपने आप में स्थिरता की गारंटी नहीं देती है।

कारण I सही है और कथन की प्रत्यक्ष व्याख्या करता है। अत्यधिक या अकुशल सिंचाई दीर्घकालिक पर्यावरणीय लागत उत्पन्न करते हुए अल्पकालिक कृषि उत्पादन बढ़ा सकती है। खराब जल निकासी से जलभराव हो सकता है, जबकि मिट्टी में लवणों का संचय लवणीकरण का कारण बन सकता है। अत्यधिक भूजल निष्कर्षण से जल स्तर नीचे जा सकता है और भविष्य की कृषि उत्पादकता को नुकसान पहुँच सकता है।

कारण II भी सही है और कथन की प्रत्यक्ष व्याख्या करता है। टिकाऊ कृषि नियोजन के लिए पानी, मिट्टी, जलवायु, फसलों और स्थानीय पारिस्थितिक स्थितियों के बीच संबंध की प्रणाली-आधारित समझ की आवश्यकता होती है। जल-तनाव वाले क्षेत्र में पानी की अधिक खपत वाला फसल पैटर्न तब भी अस्थिर रह सकता है जब सिंचाई का बुनियादी ढांचा व्यापक हो।

विश्लेषणात्मक जाल यह मानने में निहित है कि "अधिक सिंचाई = अधिक विकास = अधिक स्थिरता।" सिंचाई निश्चित रूप से कृषि उत्पादकता बढ़ा सकती है, लेकिन इसका विकासात्मक मूल्य इस बात पर निर्भर करता है कि समय के साथ संसाधन का प्रबंधन कैसे किया जाता है।

इसलिए, दोनों कारण स्वतंत्र रूप से यह स्थापित करते हैं कि सिंचाई का बुनियादी ढांचा, हालांकि कृषि विकास के लिए महत्वपूर्ण है, अपने आप में दीर्घकालिक टिकाऊ कृषि विकास की गारंटी नहीं दे सकता है।

इसलिए, **(a) सही उत्तर है।**

दैनिक अभ्यास प्रश्न – करंट अफेयर्स अनुभाग से

प्रश्न 1. स्थायी मध्यस्थता न्यायालय (Permanent Court of Arbitration - PCA) और अंतर्राष्ट्रीय विवाद समाधान के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. PCA एक अंतर-सरकारी संगठन है जो अंतर्राष्ट्रीय विवादों में मध्यस्थता (arbitration), सुलह (conciliation) और तथ्य-खोज (fact-finding) के लिए एक संस्थागत ढांचा और प्रशासनिक सहायता प्रदान करता है।
2. अपने नाम के बावजूद, PCA एक पारंपरिक स्थायी न्यायालय नहीं है जिसके विवादों का फैसला हमेशा स्थायी न्यायाधीशों की एक निश्चित पीठ द्वारा किया जाता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा सही है?

- (a) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं, और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या करता है।
- (b) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं, लेकिन कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या नहीं करता है।
- (c) कथन 1 सही है, लेकिन कथन 2 गलत है।
- (d) कथन 1 गलत है, लेकिन कथन 2 सही है।

उत्तर: (a)

व्याख्या:

दोनों कथन सही हैं, और कथन 2 PCA की एक महत्वपूर्ण वैचारिक विशेषता की व्याख्या करता है।

स्थायी मध्यस्थता न्यायालय (PCA) अंतर्राष्ट्रीय विवादों के समाधान को सुविधाजनक बनाने के लिए स्थापित एक अंतर-सरकारी संगठन है। यह राज्यों, राज्य संस्थाओं, अंतर्राष्ट्रीय संगठनों और उपयुक्त परिस्थितियों में निजी पक्षों को शामिल करने वाले विशिष्ट विवादों के लिए गठित मध्यस्थता न्यायाधिकरणों (arbitral tribunals) के लिए प्रशासनिक सहायता प्रदान कर सकता है।

मुख्य भ्रामक बिंदु "न्यायालय" (Court) शब्द में निहित है। PCA को अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय (ICJ) जैसे पारंपरिक स्थायी अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय के समान संस्थागत अर्थ में नहीं समझा जाना चाहिए। PCA एक संस्थागत ढांचा, प्रक्रियात्मक नियम और प्रशासनिक तंत्र प्रदान करता है, जबकि संबंधित विवाद के लिए विशेष मध्यस्थता न्यायाधिकरण अलग से गठित किया जा सकता है।

इस प्रकार, "स्थायी" (Permanent) विशेषण मुख्य रूप से हर विवाद का फैसला करने वाली स्थायी रूप से बैठने वाली न्यायिक पीठ के बजाय संस्थागत ढांचे की स्थायित्व को संदर्भित करता है।

प्रश्न 2. भारत के संविधान के "विशिष्ट विधिवेत्ता" (distinguished jurist) प्रावधान को सबसे सटीक रूप से समझा जा सकता है:

- (a) अनुच्छेद 124(3)(c) के तहत एक प्रावधान जो असाधारण कानूनी विद्वत्ता वाले व्यक्ति को अभ्यास करने वाला वकील या उच्च न्यायालय का न्यायाधीश न होने पर भी उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश के रूप में नियुक्ति के लिए अर्हता प्राप्त करने की अनुमति देता है।

(b) अनुच्छेद 124(3)(c) के तहत एक प्रावधान जो भारत के मुख्य न्यायाधीश को किसी भी प्रतिष्ठित शिक्षाविद को सीधे उच्चतम न्यायालय में नामांकित करने की अनुमति देता है।

(c) अनुच्छेद 124(3)(c) के तहत एक प्रावधान जिसके तहत प्रत्येक उच्चतम न्यायालय की पीठ में न्यायपालिका के बाहर से कम से कम एक विशिष्ट विधिवेत्ता शामिल होना आवश्यक है।

(d) अनुच्छेद 124(3)(c) के तहत एक प्रावधान जो संसद को एक विशेष प्रस्ताव के माध्यम से उच्चतम न्यायालय में एक प्रतिष्ठित विधिवेत्ता को नियुक्त करने में सक्षम बनाता है।

उत्तर: (a)

व्याख्या:

अनुच्छेद 124(3)(c) यह प्रावधान करता है कि कोई व्यक्ति उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश के रूप में नियुक्ति के लिए अर्ह (qualified) है यदि राष्ट्रपति की राय में वह एक विशिष्ट विधिवेत्ता (distinguished jurist) है।

यह प्रावधान महत्वपूर्ण है क्योंकि संविधान उच्च न्यायालय के न्यायाधीश के रूप में पूर्व सेवा या वकील के रूप में पूर्व अभ्यास को ही उच्चतम न्यायालय की पात्रता का एकमात्र मार्ग नहीं बनाता है। असाधारण न्यायिक ज्ञान वाला एक प्रतिष्ठित कानूनी विद्वान, शिक्षाविद, लेखक या शोधकर्ता संभावित रूप से इस संवैधानिक श्रेणी के अंतर्गत आ सकता है।

हालाँकि, यह प्रावधान योग्यता/पात्रता के बारे में है, न कि स्वचालित नियुक्ति के बारे में। इसलिए, संविधान के शब्दों को यह सुझाव देने के लिए मरोड़ा नहीं जाना चाहिए कि एक विशिष्ट विधिवेत्ता को केवल भारत के मुख्य न्यायाधीश द्वारा नामांकित किया जा सकता है या संसद द्वारा नियुक्त किया जा सकता है।

यह प्रश्न जानबूझकर संवैधानिक पात्रता और वास्तविक नियुक्ति तंत्र के बीच के अंतर का परीक्षण करता है।

प्रश्न 3. यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (UPI) के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. UPI एक साझा भुगतान बुनियादी ढांचे के माध्यम से भाग लेने वाले बैंक खातों के बीच लेनदेन को सुविधाजनक बनाकर अंतर-संचालनीय (interoperable) डिजिटल भुगतान को सक्षम बनाता है।
2. UPI लेनदेन के लिए अनिवार्य रूप से भुगतानकर्ता (payer) और प्राप्तकर्ता (payee) का एक ही बैंक में खाता होना आवश्यक है।
3. UPI को व्यापक रूप से अपनाया जाना यह दर्शाता है कि कैसे एक अंतर-संचालनीय भुगतान संरचना खुदरा डिजिटल लेनदेन के लिए व्यक्तिगत बैंक-विशिष्ट भुगतान इंटरफेस के महत्व को कम कर सकती है।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं?

(a) केवल एक

(b) केवल दो

(c) सभी तीन

(d) कोई नहीं

उत्तर: (b)

व्याख्या:

कथन 1 और 3 सही हैं, जबकि कथन 2 गलत है।

कथन 1 सही है। UPI को एक अंतर-संचालनीय भुगतान वास्तुकला के आसपास डिज़ाइन किया गया है जिसके माध्यम से उपयोगकर्ता भाग लेने वाले बैंक खातों और समर्थित अनुप्रयोगों (applications) का उपयोग करके डिजिटल भुगतान कर सकते हैं। इसका महत्व न केवल भुगतानों को डिजिटल बनाने में है, बल्कि भाग लेने वाले संस्थानों में अंतर-संचालनीयता (interoperability) को सक्षम करने में भी है।

कथन 2 गलत है। UPI के लिए भुगतानकर्ता और प्राप्तकर्ता का एक ही बैंक में खाता होना आवश्यक नहीं है। यह वास्तुकला विशेष रूप से भाग लेने वाले बैंकों के बीच लेनदेन की अनुमति देने के लिए डिज़ाइन की गई है।

कथन 3 सही है। यह अंतर-संचालनीयता का एक अधिक विश्लेषणात्मक निहितार्थ है। पारंपरिक बैंकिंग व्यवस्थाएं डिजिटल लेनदेन को व्यक्तिगत संस्थानों से निकटता से जुड़ी हुई दिखा सकती हैं। UPI भुगतान अनुभव को संस्थागत सीमाओं के पार संचालित करने की अनुमति देता है, जिससे खुदरा उपयोगकर्ताओं की एकल बैंक के स्वामित्व वाले भुगतान इंटरफ़ेस पर व्यावहारिक निर्भरता कम हो जाती है।

भ्रामक बिंदु बैंक-खाते के स्वामित्व को भुगतान-इंटरफ़ेस के स्वामित्व के साथ भ्रमित करना है। एक उपयोगकर्ता एक भाग लेने वाले बैंक में बैंक खाता रख सकता है जबकि दूसरे बैंक से जुड़े लेनदेन के लिए समर्थित UPI एप्लिकेशन/इंटरफ़ेस का उपयोग कर सकता है।

इसलिए, दो कथन सही हैं।

प्रश्न 4. मिशन रंगीन मछली 2031 (Mission Rangeen Machhli 2031) के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह भारत के सजावटी मत्स्य पालन (ornamental fisheries) क्षेत्र को संगठित और विकसित करने के उद्देश्य से बनाई गई एक रणनीतिक कार्य योजना (Strategic Action Plan) है।
2. इसके प्रस्तावित हस्तक्षेपों में ब्रूडस्टॉक प्रबंधन, प्रजनन, हैचरी संचालन, संगरोध (quarantining), मछली स्वास्थ्य, पता लगाने की क्षमता (traceability) और परिवहन जैसे पहलू शामिल हैं।
3. यह योजना सजावटी मत्स्य पालन को केवल एक घरेलू एंक्लेरियम गतिविधि के रूप में बढ़ावा देना चाहती है और अंतर्राष्ट्रीय बाजार तक पहुंच की परिकल्पना नहीं करती है।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) सभी तीन
- (d) कोई नहीं

उत्तर: (b)

व्याख्या:

कथन 1 और 2 सही हैं, जबकि कथन 3 गलत है।

कथन 1 सही है। मिशन रंगीन मछली 2031 भारत के सजावटी मत्स्य पालन क्षेत्र के विकास के लिए एक रणनीतिक कार्य योजना है। यह इस क्षेत्र में अधिक संगठन, वैज्ञानिक प्रबंधन, गुणवत्ता आश्वासन और नियामक सुसंगतता लाने का प्रयास करता है।

कथन 2 सही है। यह योजना केवल सजावटी मछलियों की अंतिम बिक्री पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय शुरू से अंत तक (end-to-end) का दृष्टिकोण अपनाती है। यह ब्रूडस्टॉक प्रबंधन, कैप्टिव ब्रीडिंग, हैचरी, कारंटाइन, मछली स्वास्थ्य, ट्रेसिबिलिटी, हैंडलिंग, परिवहन और व्यापार से संबंधित मानकीकृत प्रथाओं की परिकल्पना करती है।

कथन 3 गलत है। इस पहल का स्पष्ट रूप से एक व्यापक बाजार अभिविन्यास है, जिसमें उत्पाद की गुणवत्ता, प्रमाणन और घरेलू के साथ-साथ अंतर्राष्ट्रीय बाजारों तक पहुंच में सुधार करना शामिल है।

विश्लेषणात्मक महत्व यह है कि सजावटी मत्स्य पालन को केवल एक्वेरियम मछलियों के व्यावसायिक रखरखाव के बजाय उत्पादन, जैव सुरक्षा, प्रमाणन, रसद (logistics), आजीविका और बाजारों को शामिल करने वाली एक मूल्य श्रृंखला (value chain) के रूप में देखा जा रहा है।

इसलिए, दो कथन सही हैं।

प्रश्न 5. अभ्यास सुपर गरुड़ शील्ड (Exercise Super Garuda Shield) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह एक व्यापक बहुपक्षीय अभ्यास में विकसित होने से पहले इंडोनेशिया और संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच एक द्विपक्षीय सैन्य जुड़ाव के रूप में शुरू हुआ था।
2. इसका समकालीन प्रारूप सैन्य सहयोग के कई आयामों को शामिल करता है और भाग लेने वाले सशस्त्र बलों के बीच अंतर-संचालनीयता (interoperability) को बढ़ाना चाहता है।
3. भारत ने अभ्यास के 2026 संस्करण में भाग लिया है।
4. यह अभ्यास विशेष रूप से समुद्री क्षेत्र में आयोजित किया जाता है क्योंकि इसका मुख्य उद्देश्य भारत-प्रशांत में नौसेना अंतर-संचालनीयता है।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) केवल तीन
- (d) सभी चार

उत्तर: (c)

व्याख्या: कथन 1, 2 और 3 सही हैं, जबकि कथन 4 गलत है।

कथन 1 सही है। गरुड़ शील्ड एक द्विपक्षीय इंडोनेशिया-संयुक्त राज्य सैन्य जुड़ाव के रूप में शुरू हुआ और बाद में सुपर गरुड़ शील्ड में विकसित हुआ, जो एक बहुत बड़ा बहुपक्षीय अभ्यास है।

कथन 2 सही है। समकालीन अभ्यास पारंपरिक द्विपक्षीय सेना ड्रिल की तुलना में काफी व्यापक है। इसमें कई प्रशिक्षण गतिविधियां शामिल हैं और इसका उद्देश्य भाग लेने वाले बलों के बीच अंतर-संचालनीयता, तत्परता और समन्वय में सुधार करना है। 2026 के संस्करण में साइबर रक्षा और बहुराष्ट्रीय समन्वय से जुड़ी गतिविधियां शामिल थीं।

कथन 3 सही है। भारत 2026 संस्करण में भाग लेने वाले सशस्त्र बलों में शामिल था। सिंगापुर का रक्षा मंत्रालय 2026 के अभ्यास में 14 भाग लेने वाले सशस्त्र बलों में भारत को सूचीबद्ध करता है।

कथन 4 गलत है। यह अभ्यास केवल समुद्री क्षेत्र तक सीमित नहीं है। इसकी गतिविधियां इंडोनेशिया में कई सैन्य आयातों और स्थानों में फैली हुई हैं। 2026 के अभ्यास में भूमि-उन्मुख प्रशिक्षण के साथ-साथ साइबर और अन्य घटक शामिल थे।

मुख्य यूपीएससी जाल "शील्ड" और भारत-प्रशांत को विशेष रूप से नौसेना अभ्यासों से जोड़ना है। सुपर गरुड़ शील्ड मौलिक रूप से एक बहुपक्षीय अंतर-संचालनीयता और तत्परता अभ्यास है, न कि केवल एक समुद्री ड्रिल।

इसलिए, **तीन कथन सही हैं।**

प्रश्न 6. साउदर्न आल्प्स (Southern Alps) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. वे न्यूजीलैंड के दक्षिणी द्वीप (South Island) की अधिकांश लंबाई में फैले हुए हैं।
2. वे अल्पाइन फॉल्ट (Alpine Fault) के साथ विवर्तनिकी (tectonic) गतिविधि से निकटता से जुड़े हुए हैं।
3. उनकी उपस्थिति दक्षिणी द्वीप के पश्चिमी और पूर्वी हिस्सों के बीच वर्षा में एक महत्वपूर्ण अंतर में योगदान देती है।
4. एओरा की/माउंट कुक (Aoraki/Mount Cook), जो न्यूजीलैंड की सबसे ऊंची चोटी है, साउदर्न आल्प्स के भीतर स्थित है।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं?

- (a) केवल दो
- (b) केवल तीन
- (c) सभी चार
- (d) केवल एक

उत्तर: (c)

व्याख्या: सभी चारों कथन सही हैं।

साउदर्न आल्प्स / का तिरितिरि ओ ते मोआना (Southern Alps / Kā Tiritiri o te Moana) न्यूजीलैंड के दक्षिणी द्वीप की मुख्य पर्वत श्रृंखला बनाते हैं और इसकी अधिकांश लंबाई में लगभग 500 किमी तक फैले हुए हैं। एओराकी/माउंट कुक, लगभग 3,724 मीटर की ऊंचाई पर, न्यूजीलैंड का सबसे ऊंचा पर्वत है और साउदर्न आल्प्स के भीतर स्थित है।

यह श्रृंखला अल्पाइन फॉल्ट (Alpine Fault) से मजबूती से जुड़ी हुई है, जहाँ ऑस्ट्रेलियाई और प्रशांत प्लेटें परस्पर क्रिया करती हैं। निरंतर विवर्तनिकी गतिविधि ने साउदर्न आल्प्स के उत्थान में योगदान दिया है और इस क्षेत्र को विवर्तनिकी रूप से अत्यधिक सक्रिय बनाता है।

यह श्रृंखला एक महत्वपूर्ण पर्वतीय वर्षा (orographic) प्रभाव भी उत्पन्न करती है। नम पछुआ हवाएं पहाड़ों से टकराती हैं, जिससे पश्चिमी तरफ बहुत अधिक वर्षा होती है, जबकि पर्वत श्रृंखला के पूर्व के क्षेत्र, जिसमें कैंटरबरी के हिस्से शामिल हैं, तुलनात्मक रूप से शुष्क हैं और सूखे की स्थिति का अनुभव कर सकते हैं।

इस प्रकार, साउदर्न आल्प्स न केवल एक पर्वत प्रणाली के रूप में महत्वपूर्ण हैं, बल्कि प्लेट विवर्तनिकी, हिमनद भू-आकृति विज्ञान (glacial geomorphology), पर्वतीय वर्षा और क्षेत्रीय जलवायु अंतर के एक चौराहे के रूप में भी महत्वपूर्ण हैं।

इसलिए, सभी चार कथन सही हैं — (c)।

दैनिक अभ्यास हेतु विषय आधारित प्रश्न

प्रश्न 1. "दार्शनिक विचारों, धार्मिक विश्वासों और भौतिक स्थितियों के बीच अंतरक्रिया ने प्रारंभिक भारतीय सभ्यता के बौद्धिक और सांस्कृतिक परिदृश्य को रूपांतरित कर दिया।" प्राचीन भारत के प्रमुख धार्मिक और दार्शनिक विकासों के संदर्भ में चर्चा कीजिए।

उत्तर: प्राचीन भारत के बौद्धिक इतिहास को केवल धार्मिक सिद्धांतों के एक क्रम के रूप में नहीं समझा जा सकता है। यह दार्शनिक जांच, बदलती सामाजिक संरचनाओं, आर्थिक परिवर्तनों और राजनीतिक विकासों की अंतरक्रिया (interaction) द्वारा आकार लेता था। ब्राह्मणवादी, बौद्ध और जैन परंपराओं का उद्भव और विकास यह दर्शाता है कि विचारों ने किस प्रकार बदलती भौतिक और सामाजिक स्थितियों के प्रति प्रतिक्रिया दी, साथ ही उन्हें प्रभावित भी किया।

उत्तर-वैदिक काल ने धार्मिक विचारों के स्वरूप में महत्वपूर्ण परिवर्तन देखे। जैसे-जैसे कृषि का विस्तार हुआ, स्थायी समुदाय अधिक प्रमुख होते गए और सामाजिक विषमता गहरी होती गई। कर्मकांड विशेषज्ञों के बढ़ते महत्व और विस्तृत यज्ञों ने अस्तित्व के स्वरूप, आत्मा और अंतिम सत्य (परम तत्व) के बारे में दार्शनिक प्रश्नों को जन्म दिया। उपनिषद् परंपरा ने केवल बाहरी कर्मकांडों पर जोर देने के बजाय आत्मा, ब्रह्म, कर्म और मोक्ष से संबंधित दार्शनिक चिंतन की ओर एक महत्वपूर्ण बौद्धिक परिवर्तन का प्रतिनिधित्व किया।

लगभग उसी ऐतिहासिक क्षण में, विभिन्न श्रमण परंपराओं के बीच बहसों की विशेषता वाले एक व्यापक बौद्धिक वातावरण के भीतर बौद्ध और जैन परंपराओं का उदय हुआ। उन्होंने स्थापित कर्मकांडीय व्यवस्था की कई मान्यताओं पर सवाल उठाया। बुद्ध ने चार आर्य सत्त्यों, अष्टांगिक मार्ग, नैतिक आचरण और दुखों से मुक्ति पर बल दिया, जबकि जैन धर्म ने अहिंसा, तपस्या, कर्म और मोक्ष पर विशेष बल दिया।

ये आंदोलन व्यापक सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनों से भी जुड़े हुए थे। शहरों के विकास, लंबी दूरी के व्यापार और मुद्रीकरण (monetisation) ने व्यापारियों और शहरी समुदायों सहित नए सामाजिक समूहों का निर्माण किया। ऐसे समूहों को उन धार्मिक परंपराओं में आकर्षण मिला जो विशेष रूप से जटिल याज्ञिक अनुष्ठानों पर निर्भर नहीं थीं। शासकों और व्यापारियों द्वारा दिए गए संरक्षण ने बौद्ध और जैन संस्थानों के विस्तार में मदद की।

मौर्य काल, विशेष रूप से अशोक के तहत, राजनीतिक सत्ता और नैतिक विचारों के बीच अंतरक्रिया को प्रदर्शित करता है। अशोक का धम्म केवल बौद्ध सिद्धांतों का पुनरुत्पादन नहीं था; यह सहिष्णुता, करुणा, विभिन्न संप्रदायों के प्रति सम्मान और जनकल्याण पर जोर देने वाले एक नैतिक ढांचे के निर्माण का प्रयास था।

भौतिक संस्कृति भी बौद्धिक और धार्मिक परिवर्तन का प्रमाण प्रदान करती है। स्तूप, मठ, गुफा वास्तुकला, मूर्तियां और शिलालेख यह प्रदर्शित करते हैं कि धार्मिक विचार किस प्रकार सार्वजनिक और सांस्कृतिक संस्थानों में गहराई से स्थापित हो गए।

हालाँकि, इन विकासों को एक प्रणाली द्वारा दूसरी प्रणाली के सरल प्रतिस्थापन (replacement) के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। ब्राह्मणवादी परंपराओं ने अनुकूलन किया और वे विकसित हुईं, जबकि बौद्ध और जैन धर्म ने स्वयं विविध संप्रदायों और प्रथाओं को विकसित किया।

इस प्रकार, प्राचीन भारत का बौद्धिक इतिहास पूर्ण विच्छेद के बजाय संवाद को दर्शाता है। धार्मिक परंपराओं ने बदलती आर्थिक और सामाजिक स्थितियों के प्रति प्रतिक्रिया दी और साथ ही नैतिकता, सत्ता, सामाजिक आचरण और मोक्ष के अर्थ से जुड़े विचारों को नया आकार दिया। इस गतिशील अंतरक्रिया ने दुनिया के इतिहास में सबसे विविध दार्शनिक परंपराओं में से एक का निर्माण किया।

प्रश्न 2. "शीत युद्ध के बाद सत्ता के वैकल्पिक केंद्रों के उदय ने अंतर्राष्ट्रीय राजनीति को मुख्य रूप से द्विध्रुवीय संरचना से एक अधिक जटिल और प्रतिस्पर्धी व्यवस्था में बदल दिया है।" परीक्षण कीजिए।

उत्तर: शीत युद्ध के अंत ने अंतर्राष्ट्रीय राजनीति की संरचना को मौलिक रूप से बदल दिया। 1991 में सोवियत संघ के विघटन ने संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत संघ के बीच द्विध्रुवीय प्रतिस्पर्धा को समाप्त कर दिया और शुरुआत में एक ऐसी अवधि उत्पन्न की जिसे अक्सर एकध्रुवीयता (unipolarity) के रूप में वर्णित किया जाता है। हालाँकि, सत्ता के वैकल्पिक केंद्रों के बाद के उदय ने अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था को तेजी से बहुध्रुवीय, खंडित और विषय-विशिष्ट (issue-specific) बना दिया है।

यूरोपीय संघ सत्ता के एक महत्वपूर्ण वैकल्पिक केंद्र का प्रतिनिधित्व करता है। यद्यपि इसके पास किसी महाशक्ति की पारंपरिक सैन्य क्षमताएं नहीं हैं, फिर भी इसका विशाल आर्थिक वजन, नियामक प्रभाव और राजनयिक उपस्थिति इसे पर्याप्त मानक (normative) और आर्थिक शक्ति का प्रयोग करने की अनुमति देती है। व्यापार और विनियमन के माध्यम से वैश्विक मानकों को आकार देने की इसकी क्षमता यह दर्शाती है कि अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में शक्ति केवल सैन्य ताकत तक सीमित नहीं है।

चीन का उदय अधिक व्यापक रहा है। इसके आर्थिक विस्तार, तकनीकी क्षमताओं, सैन्य आधुनिकीकरण, बुनियादी ढांचा कूटनीति और बढ़ती अंतर्राष्ट्रीय संस्थागत उपस्थिति ने पश्चिमी शक्तियों के पूर्व प्रभुत्व को चुनौती दी है। बेल्ट एंड रोड (BRI) ढांचे से जुड़ी पहल और वैश्विक संस्थानों में चीन की बढ़ती भूमिका आर्थिक क्षमता को रणनीतिक प्रभाव में बदलने की उसकी आकांक्षा को प्रदर्शित करती है।

इसी तरह, संयुक्त राज्य अमेरिका और चीन की तुलना में अपनी सोवियत-उत्तर अर्थव्यवस्था में संरचनात्मक गिरावट के बावजूद रूस एक महत्वपूर्ण सैन्य और भू-राजनीतिक अभिनेता बना हुआ है। जापान, भारत और अन्य क्षेत्रीय शक्तियों ने भी अधिक रणनीतिक महत्व हासिल कर लिया है।

ब्रिक्स (BRICS) और अन्य समूहों का उदय प्रभाव के प्रसार (diffusion of influence) को और अधिक चित्रित करता है। ये व्यवस्थाएं वैश्विक प्रशासन संस्थानों में उभरती अर्थव्यवस्थाओं के अधिक प्रतिनिधित्व की मांगों को दर्शाती हैं।

हालाँकि, सत्ता के वैकल्पिक केंद्र अनिवार्य रूप से एक एकजुट पश्चिम-विरोधी गुट का निर्माण नहीं करते हैं। उनके हित अक्सर एक-दूसरे से भिन्न होते हैं।

इसलिए यह परिवर्तन केवल एक हेगमैन (अधिनायक) से कई समकक्ष शक्तियों में परिवर्तन नहीं है। समकालीन अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में शक्ति की कई परतें शामिल हैं: सैन्य, आर्थिक, तकनीकी, जनसांख्यिकी, वित्तीय, संस्थागत और मानक।

भारत के लिए, यह बदलती व्यवस्था अवसर और चुनौतियाँ दोनों पैदा करती है। रणनीतिक स्वायत्तता (Strategic Autonomy) अधिक मूल्यवान हो जाती है क्योंकि भारत एक साथ कई शक्ति केंद्रों के साथ जुड़ सकता है। साथ ही, प्रमुख शक्तियों के बीच प्रतिद्वंद्विता भारत के राजनयिक विकल्पों पर दबाव भी उत्पन्न कर सकती है।

इस प्रकार, समकालीन दुनिया को सीधे-सरल बहुध्रुवीयता के बजाय जटिल बहुध्रुवीयता के रूप में सबसे बेहतर ढंग से वर्णित किया जा सकता है। शक्ति असमान रूप से वितरित है और विभिन्न क्षेत्रों में भिन्न होती है। वैश्विक प्रशासन के लिए मुख्य चुनौती शक्ति केंद्रों की इस बहुलता को स्थायी भू-राजनीतिक टकराव में बदलने देने के बजाय सहकारी तंत्र में बदलना है।

प्रश्न 3. "एक अर्थव्यवस्था वास्तविक उत्पादन और रोजगार में आनुपातिक वृद्धि का अनुभव किए बिना भी अपनी उत्पादक क्षमता में वृद्धि का अनुभव कर सकती है।" समग्र मांग (Aggregate Demand) की केनेसियन अवधारणा का उपयोग करते हुए इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: केनेसियन ढांचा इस बात पर जोर देता है कि किसी अर्थव्यवस्था का उत्पादन और रोजगार का वास्तविक स्तर केवल उसकी उत्पादक क्षमता से निर्धारित नहीं होता है, बल्कि समग्र मांग के स्तर से निर्धारित होता है। इसलिए, किसी अर्थव्यवस्था के पास पर्याप्त कारखाने, श्रम और तकनीकी क्षमता हो सकती है, लेकिन फिर भी वह अपनी क्षमता से नीचे काम कर सकती है क्योंकि मांग अपर्याप्त है।

समग्र मांग में मुख्य रूप से एक सरल अर्थव्यवस्था में उपभोग व्यय और निवेश व्यय शामिल होते हैं, जिसमें अधिक व्यापक मॉडल में सरकारी व्यय और शुद्ध निर्यात को जोड़ा जाता है। केन्स का तर्क था कि फर्म उत्पादन और रोजगार के निर्णय अपने आउटपुट की अपेक्षित मांग के आधार पर लेती हैं। यदि समग्र मांग अपर्याप्त है, तो फर्मों के पास अपनी पूर्ण उत्पादक क्षमता का उपयोग करने का बहुत कम प्रोत्साहन होता है।

एक ऐसी अर्थव्यवस्था पर विचार करें जिसमें फर्मों के पास ₹100 इकाइयों का उत्पादन करने के लिए पर्याप्त मशीनरी और श्रमिक हैं, लेकिन घर और फर्म मिलकर केवल ₹80 इकाइयों की मांग करते हैं। केवल क्षमता मौजूद होने के कारण फर्म शेष ₹20 का उत्पादन नहीं करेंगी। बिना बिके सामान का उत्पादन करने से सूची (inventory) बढ़ेगी और लाभप्रदता कम होगी। नतीजतन, फर्म उत्पादन और रोजगार में कटौती कर सकती हैं।

यह संभावित उत्पादन (Potential Output) और संतुलन उत्पादन (Equilibrium Output) के बीच अंतर को स्पष्ट करता है। संभावित उत्पादन उस स्तर को संदर्भित करता है जो प्रचलित तकनीकी परिस्थितियों में उपलब्ध संसाधनों का कुशलतापूर्वक उपयोग किए जाने पर उत्पादित किया जा सकता है। संतुलन उत्पादन समष्टि अर्थशास्त्र के ढांचे के भीतर समग्र मांग और समग्र आपूर्ति की परस्पर क्रिया द्वारा निर्धारित होता है।

गुणक (Multiplier) की अवधारणा इस तर्क को मजबूत करती है। स्वायत्त व्यय में एक प्रारंभिक वृद्धि राष्ट्रीय आय में बड़ी वृद्धि उत्पन्न कर सकती है क्योंकि एक व्यक्ति का व्यय दूसरे व्यक्ति की आय बन जाता है, जिसका एक हिस्सा बाद में फिर से खर्च किया जाता है। इसके विपरीत, निवेश या उपभोग में गिरावट का कई गुना संकुचनकारी (contractionary) प्रभाव पड़ सकता है।

यह यह भी बताता है कि अर्थव्यवस्थाएं अनैच्छिक बेरोजगारी (Involuntary Unemployment) का अनुभव क्यों कर सकती हैं। श्रमिक प्रचलित मजदूरी पर काम करने के लिए तैयार हो सकते हैं, और फर्मों के पास उत्पादक क्षमता हो सकती है, लेकिन अपर्याप्त मांग फर्मों को उन्हें काम पर रखने से रोकती है।

इसलिए सरकार की नीति राजकोषीय उपायों के माध्यम से आर्थिक गतिविधियों को प्रभावित कर सकती है। मांग में कमी की अवधि के दौरान, सार्वजनिक व्यय में वृद्धि या कुछ करों में कमी समग्र मांग को प्रोत्साहित कर सकती है। हालांकि, जब अर्थव्यवस्था पहले से ही पूर्ण क्षमता के करीब हो, तब अत्यधिक मांग प्रोत्साहन मुद्रास्फीति का दबाव बना सकता है।

केनेसियन अंतर्दृष्टि मंदी के दौरान विशेष रूप से प्रासंगिक बनी हुई है: बेरोजगारी केवल उत्पादक संसाधनों की कमी के बजाय अपर्याप्त प्रभावी मांग का परिणाम हो सकती है।

इसलिए, आर्थिक क्षमता और वास्तविक उत्पादन को समान नहीं माना जाना चाहिए। उत्पादक क्षमता का उपयोग पूरी तरह से समग्र मांग के स्तर और संरचना पर निर्भर करता है। यह अंतर यह समझाने में मदद करता है कि क्यों अर्थव्यवस्थाओं में एक ही समय में अप्रयुक्त संसाधन, बेरोजगार श्रम और पर्याप्त उत्पादक क्षमता हो सकती है।

प्रश्न 4. "नैतिक शासन के लिए लोक सेवकों को कानूनी अनुपालन को नैतिक आचरण का पूर्ण अर्थ मानने के बजाय, कानून के अनुपालन (Legality) के साथ तात्त्विक न्याय (Substantive Justice) का तालमेल बिठाने की आवश्यकता होती है।" चर्चा कीजिए।

उत्तर: लोक प्रशासन कानूनों, नियमों और प्रक्रियाओं के ढांचे के भीतर काम करता है। इसलिए नैतिक शासन के लिए कानून का अनुपालन (Legality) अनिवार्य है, क्योंकि सार्वजनिक शक्ति का मनमाना प्रयोग समानता, जवाबदेही और कानून के शासन को कमजोर करता है। हालांकि, केवल कानून का अनुपालन ही नैतिक आचरण के पूर्ण अर्थ को समाप्त नहीं करता है। कोई कार्रवाई तकनीकी रूप से नियमों का अनुपालन कर सकती है, जबकि एक ऐसा परिणाम उत्पन्न कर सकती है जो अन्यायपूर्ण, भेदभावपूर्ण या वैध मानवीय चिंताओं के प्रति संवेदनशील न हो।

इस अंतर को तीन अवधारणाओं के माध्यम से समझा जा सकता है: वैधानिकता (Lawfulness), नैतिकता (Morality) और न्याय (Justice)। कानून न्यूनतम मानक स्थापित करता है जिनका लोक सेवकों को पालन करना चाहिए। नैतिकता यह पूछती है कि क्या अधिकार का प्रयोग सत्यनिष्ठा, निष्पक्षता, करुणा, पारदर्शिता और जनहित जैसे मूल्यों को दर्शाता है। न्याय के लिए अधिकारियों को यह विचार करने की भी आवश्यकता होती है कि निर्णय लाभों और बोझों को निष्पक्ष रूप से वितरित करते हैं या नहीं।

उदाहरण के लिए, एक प्रशासनिक अधिकारी किसी पात्रता नियम को सख्ती से लागू कर सकता है और किसी व्यक्ति के आवेदन को खारिज कर सकता है क्योंकि एक दस्तावेज देर से जमा किया गया था। इस तरह की कार्रवाई कानूनी रूप से तर्कसंगत हो सकती है। हालांकि, यदि देरी किसी प्रमाणित प्राकृतिक आपदा या प्रशासनिक विफलता के कारण हुई है, तो नियम का कठोर अनुप्रयोग एक अन्यायपूर्ण परिणाम दे सकता है। नैतिक शासन के लिए अधिकारी को यह जांचने की आवश्यकता होती है कि क्या कानूनी ढांचा स्वयं विवेक, समीक्षा या उपचारात्मक कार्रवाई की अनुमति देता है।

इसका मतलब यह नहीं है कि अधिकारियों को व्यक्तिगत नैतिकता के नाम पर कानूनों की अनदेखी करनी चाहिए। इस तरह के दृष्टिकोण से मनमाना प्रशासन पैदा हो सकता है। इसके बजाय, नैतिक विवेक को संवैधानिक और कानूनी सीमाओं के भीतर काम करना चाहिए। उद्देश्य कानून के स्थान पर व्यक्तिगत प्राथमिकताओं को रखना नहीं है, बल्कि उनके वैध उद्देश्य के अनुसार नियमों की व्याख्या और कार्यान्वयन करना है।

न्याय, समानता, गरिमा और बंधुत्व के संवैधानिक मूल्य लोक प्रशासन के लिए एक व्यापक नैतिक ढांचा प्रदान करते हैं। इसलिए सिविल सेवकों में सहानुभूति, निष्पक्षता, दृढ़ विश्वास का साहस (courage of conviction) और जवाबदेही जैसे गुणों की आवश्यकता होती है।

नैतिक शासन के लिए प्रक्रियात्मक समानता और तात्त्विक समानता के बीच के अंतर के प्रति संवेदनशीलता की भी आवश्यकता होती है। सभी के साथ एक जैसा व्यवहार करना कभी-कभी नुकसान को बनाए रख सकता है। एक वास्तविक नैतिक प्रशासन के लिए कानून के दायरे में रहते हुए कमजोर समूहों के लिए उचित समायोजन (reasonable accommodation) की आवश्यकता हो सकती है।

पारदर्शिता, सामाजिक अंकेक्षण (social audit), शिकायत निवारण, कारण सहित आदेश (reasoned orders), नागरिक चार्टर और स्वतंत्र निगरानी जैसी व्यवस्थाएं व्यक्तिगत गुण पर पूरी तरह से निर्भर रहने के बजाय नैतिक व्यवहार को संस्थागत बना सकती हैं।

अंततः, आदर्श लोक सेवक को न तो नियमों से बंधा हुआ अंधा नौकरशाह होना चाहिए और न ही ऐसा व्यक्ति जो व्यक्तिगत नैतिकता को कानून से बेहतर मानता हो। उचित दृष्टिकोण सिद्धांतबद्ध विवेक (principled discretion) है: संवैधानिक नैतिकता, करुणा और जनकल्याण की चिंता के साथ कानून का सम्मान।

इस प्रकार, नैतिक शासन तब उभरता है जब कानून सीमा प्रदान करता है, सत्यनिष्ठा प्रेरणा प्रदान करती है, और न्याय दिशा प्रदान करता है।

प्रश्न 5. मिशन ज़ीरो: देपालपुर का लेगेसी वेस्ट ट्रांसफॉर्मेशन (विरासत कचरा रूपांतरण) यह दर्शाता है कि शहरी कचरा प्रबंधन केवल स्वच्छता की समस्या नहीं है बल्कि शासन, संसाधन दक्षता और व्यवहार परिवर्तन का प्रश्न है। भारतीय शहरों द्वारा इस पहल से सीखे जा सकने वाले पाठों का समालोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

उत्तर: भारत में शहरी कचरा प्रबंधन की चुनौती तेजी से "कचरे का निपटान कहां करें" के सरल प्रश्न से हटकर इस जटिल प्रश्न की ओर बढ़ गई है कि कचरे को कैसे रोका जाए, संसाधनों को कैसे पुनरुत्पादित किया जाए और जमा हुए विरासत कचरे (Legacy Waste) का वैज्ञानिक रूप से उपचार कैसे किया जाए। देपालपुर का मिशन ज़ीरो इस बदलाव का एक महत्वपूर्ण उदाहरण प्रदान करता है।

मध्य प्रदेश का देपालपुर, 'स्वच्छ शहर जोड़ी' पहल के तहत एसबीएम-यू 2.0 (SBM-U 2.0) के तहत पांच वर्षों में एकत्र हुए लगभग 1,250 मीट्रिक टन कचरे का वैज्ञानिक रूप से उपचार करके शून्य विरासत कचरा (Zero Legacy Waste) प्राप्त करने वाला पहला शहर बन गया। इस पहल में एक मेंटर-मेंटी मॉडल (Each One Teach One) के माध्यम से देपालपुर नगर परिषद और इंदौर नगर निगम के बीच सहयोग शामिल था।

पहला प्रमुख पाठ **स्रोत पर पृथक्करण (source segregation)** का महत्व है। देपालपुर ने चार श्रेणियों में पृथक्करण के साथ 100% घर-घर कचरा संग्रहण हासिल किया। पृथक्करण से पुनर्चक्रण योग्य वस्तुओं (recyclables) को पुनर्प्राप्त करने की संभावना में सुधार होता है और संभावित रूप से मूल्यवान सामग्री के दूषित होने को रोका जा सकता है।

दूसरा, यह पहल **चक्रीय अर्थव्यवस्था (Circular Economy)** के सिद्धांतों को दर्शाती है। लगभग 4.5 टन प्लास्टिक, धातु और कांच को एकत्र किया गया और अधिकृत रिसाइकलर्स को आपूर्ति की गई, जबकि लगभग 50-60 टन रिफ्यूज-डिराइव्ड फ्यूल (RDF) को प्रसंस्करण और उसके बाद सीमेंट कारखानों में सह-प्रसंस्करण के लिए भेजा गया। इस प्रकार, कचरे को केवल एक निपटान बोझ के बजाय आंशिक रूप से एक संसाधन के रूप में देखा गया।

तीसरा, यह पहल **अंतर-शहर संस्थागत सीखने (inter-city institutional learning)** के महत्व को दर्शाती है। प्रत्येक शहरी स्थानीय निकाय को स्वतंत्र रूप से कचरा-प्रबंधन क्षमता विकसित करने की आवश्यकता के बजाय, मेंटर-मेंटी मॉडल सफल प्रथाओं को कमजोर तकनीकी और प्रबंधकीय क्षमताओं वाले शहरों में स्थानांतरित करने की अनुमति देता है।

चौथा, कचरा प्रबंधन के लिए **प्रौद्योगिकी, नगर निगम क्षमता और सामुदायिक भागीदारी के एकीकरण** की आवश्यकता होती है। विरासत कचरे का वैज्ञानिक उपचार लैंडफिल पर निर्भरता को कम कर सकता है, लेकिन दीर्घकालिक सफलता के लिए पृथक्करण, संग्रह, प्रसंस्करण और व्यवहार परिवर्तन के माध्यम से नए कचरे के संचय को रोकने की आवश्यकता होती है।

यह पहल एक महत्वपूर्ण शासन सिद्धांत को भी उजागर करती है: **पर्यावरणीय परिणाम संस्थागत समन्वय पर निर्भर करते हैं।** नगर निकायों, स्वच्छता कार्यकर्ताओं, पुनर्चक्रणकर्ताओं, निजी प्रसंस्करणकर्ताओं और नागरिकों को एक एकीकृत प्रणाली के भीतर काम करना चाहिए।

हालाँकि, इस मॉडल का अनुकरण (replication) यांत्रिक नहीं होना चाहिए। शहर कचरे की संरचना, भूमि की उपलब्धता, वित्तीय क्षमता, जनसंख्या घनत्व और संस्थागत क्षमता में भिन्न होते हैं। इसलिए, देपालपुर मॉडल को हूबहू कॉपी करने के बजाय अनुकूलित (adapt) किया जाना चाहिए।

200 पौधों के रोपण के साथ शुरू होकर, उपचारित डंपसाइट का हरे-भरे सार्वजनिक स्थान में रूपांतरण यह भी दर्शाता है कि कैसे पर्यावरणीय उपचार एक दृश्यमान सार्वजनिक लाभांश (visible public dividend) उत्पन्न कर सकता है।

आगे बढ़ते हुए, भारतीय शहरों को स्रोत पर पृथक्करण, विकेंद्रीकृत प्रसंस्करण, सामग्री वसूली सुविधाओं (Material Recovery Facilities), वैज्ञानिक लैंडफिल उपचार, डेटा-आधारित निगरानी, अनौपचारिक कचरा बीनने वालों का एकीकरण, विस्तारित उत्पादक उत्तरदायित्व (EPR) और उपयोगकर्ता भागीदारी को मजबूत करना चाहिए।

इसलिए, मिशन ज़ीरो केवल इसलिए महत्वपूर्ण नहीं है क्योंकि इसने पुराने डंपसाइट को हटा दिया, बल्कि इसलिए कि यह कचरा निपटान से संसाधन वसूली की ओर, पृथक नगरपालिका कार्रवाई से संस्थागत सहयोग की ओर, और स्वच्छता बुनियादी ढांचे से टिकाऊ शहरी शासन की ओर बदलाव को प्रदर्शित करता है।

Dream | Dare | Deliver